

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
सेमेस्टर प्रणाली अन्तर्गत तैयार किया गया पाठ्यक्रम
केन्द्रीय हिन्दी विभाग
कीर्तिपुर

डीन कार्यालय
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय
त्रि. वि. कीर्तिपुर के लिए प्रस्तुत पाठ्यक्रम
२०७०

विभागीय प्रमुख का मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत सेमेस्टर प्रणाली को ध्यान में रखते हुए स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम, २०७० को तैयार किया गया है। इस नए पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय विकास के हित को सर्वोपरि रखते हुए विद्यार्थी के सर्वाङ्गिक विकास पर पूरा जोर दिया गया है। विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार हैं इसलिए सद्गुणों से परिपूर्ण सत्साहित्य के अध्ययन अध्यापन द्वारा उन्हें सुयोग्य और सक्षम बनाकर देश को सुदृढ़ बनाना आज समय की आवश्यकता है, विभाग का परम कर्तव्य भी।

हिन्दी साहित्य में प्रतिबिम्बित परिवार, समाज, देश और विश्व के बहुमुखी छवि और मानव के अन्तःकरण के सूक्ष्मतम भाव के आस्वादन द्वारा स्वस्थ, संतुलित और उच्चतम जीवन संस्कार को विद्यार्थी में अभिमुख कराने के उद्देश्य से यह नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। आवश्यक दक्ष जनशक्ति, स्तरयुक्त शिक्षा प्रदान करना साथ ही व्यवहारिक प्रयोजनमूलक, समय सापेक्ष बनाने के उद्देश्य से हिन्दी की आदि, मध्य और आधुनिक काल की सम्पूर्ण साहित्यिक प्रवृत्तियों को इस पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है। भाषा विज्ञान, भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त के साथ ही संस्कृत साहित्य के अध्ययन को भी इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखा गया है। इस पाठ्यक्रम से छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व बहन करने तथा हिन्दी भाषा साहित्य के सृजनात्मक समालोचनात्मक, अनुसन्धानात्मक गतिविधियों में अपूर्व सक्रियता आएगी तथा छात्रगण इन क्रियाकलापों में अपूर्व भूमिका निर्वाह करने में समर्थ और सफल होंगे।

छात्र को हिन्दी साहित्य का सर्वाङ्गिक आधिकारिक ज्ञान प्राप्त कराना, विश्व स्तर पर हिन्दी साहित्य को समझना, सृजनशीलता के प्रति उन्हें उन्मुख करना, तुलनात्मक अध्ययन के प्रति उनमें अभिरुचि पैदा कराना तथा अनुवाद सम्बन्धी, पत्रकारिता सम्बन्धी, अनुसंधान प्रविधि सम्बन्धी गतिविधियों में अपूर्व भूमिका निर्वाह करवाना इस पाठ्यक्रम की खास विशेषता कही जा सकती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को हिन्दी साहित्य के विशेषज्ञ के रूप में खड़ा करने में समर्थ होगा।

यह नवीन पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा साहित्य को आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समग्र रूप में सोच समझकर विद्यार्थी को ज्ञानार्जन कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। स्नातकोत्तर (हिन्दी) अध्ययन हेतु चार सेमेस्टर में इस पाठ्यक्रम को बाटा गया है। सेमेस्टर प्रणाली की परीक्षा विश्वविद्यालय नियमानुसार होगी। प्रत्येक पत्र का पूर्णांक ६० होगा और ४० अंकों की परीक्षा विभागीय होगी। प्रत्येक सेमेस्टर की परीक्षा हर छः महीनों में आयोजित की जाएगी। विस्तृत जानकारी इसी पाठ्यक्रम में संलग्न 'परिचयात्मक विवरण एवं निर्देशन' में उपलब्ध है।

इस पाठ्यक्रम को बनाने हेतु विभाग में कार्यरत तीनों स्थायी शिक्षकों की एक तीन सदस्यों की एक टोली बनाई गई। मेरे नेतृत्व में गठित इस टोली की सक्रिय सदस्या डा. श्वेता दीप्ति (उप-प्राध्यापक) तथा श्री मती मंचला भा (उप-प्राध्यापक) से मुझे इस कार्य में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके सक्रिय सहयोग से ही इस पाठ्यक्रम को शीघ्र तैयार करने में सफलता मिल सकी। अतः इन्हें हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ।

इस पाठ्यक्रम को तैयार करने के लिए त्रिभुवन विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रा. डा. हिराबहादुर महर्जन, शिक्षाध्यक्ष प्रा.गुणनिधि न्यौपाने तथा रजिस्ट्रार प्रा. चन्द्रमणि पौडेल जी से विशेष प्रेरणा मिली है अतः आप सबों के प्रति हिन्दी विभाग अत्यन्त आभारी है। मानविकी तथा समाजशास्त्र संकाय के डीन प्रा. डा. चिन्तामणि पोखरेल जी से हमें विशेष निर्देशन, सहयोग तथा प्रेरणा मिली है। इसी तरह सहायक डीन डा. नीलम कुमार शर्मा, श्री उत्तम भट्टराई तथा डा. तारा पाण्डेय जी से हमें सक्रिय सहयोग तथा प्रोत्साहन मिला है। मैं अपने विभाग की ओर से आप सबों का हार्दिक आभार तथा कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ।

हिन्दी स्थायी समिति तथा हिन्दी विषय समिति के सदस्यों के प्रति भी हिन्दी विभाग की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। आप सबों की सक्रिय सहभागिता तथा उचित परामर्श और सहमति से यह पाठ्यक्रम अपने पूर्ण और स्वस्थ कलेवर में प्रस्तुत हो सका। अन्त में समस्त हिन्दी परिवार के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। आशा है यह पाठ्यक्रम छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

डा. उषा ठाकुर
विभागीय प्रमुख
हिन्दी केन्द्रीय विभाग
तथा
अध्यक्ष, हिन्दी विषय समिति

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
सेमेस्टर प्रणाली अन्तर्गत तैयार किया गया पाठ्यक्रम
स्नातकोत्तर केन्द्रीय हिन्दी विभाग

कीर्तिपुर

परिचयात्मक विवरण एवं निर्देशन

इस पाठ्यक्रम को स्नातकोत्तर (हिन्दी) अध्ययन हेतु चार सेमेस्टर में बाटा गया है। प्रत्येक सेमेस्टर की परीक्षा विश्वविद्यालय के नियमानुसार हर छः महीनों में होगी। छात्रों की आवश्यकता और रुचि का ध्यान रखते हुए चतुर्थ सेमेस्टर का संकेतांक (कोड) ५७० ऐच्छिक रखा गया है, इस पत्र में अनुसंधान अथवा विशेष पत्र के अन्तर्गत साहित्यकार विशेष और उनकी कृतियों को शामिल किया गया है, जिसमें विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किन्हीं दो विषय का चुनाव कर सकेंगे, परन्तु इस क्रम में हिन्दी केन्द्रीय विभाग के प्रमुख की सहमति आवश्यक होगी।

पाठ्यक्रम के लिए सामान्य उद्देश्य :

शिक्षा जीवनोपयोगी होनी चाहिए। शिक्षा और साहित्य का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है 'शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन विधा साहित्य विधा अर्थात् शब्द और अर्थ के सहयोग वाली विधा साहित्य विधा है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है, "सहित शब्द से साहित्य के मिलने का एक भाव देखा जाता है। वह केवल भाव भाव का, भाषा भाषा का, ग्रन्थ ग्रन्थ का ही मिलन नहीं है, बल्कि मनुष्य के साथ मनुष्य का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अत्यन्त अन्तरंग मिलन भी है जो साहित्य के अतिरिक्त अन्य से सम्भव नहीं है।"

साहित्य ही वह माध्यम है जो विद्या, बुद्धि और विवेक का मंत्र देकर मानव को सद्ज्ञान प्रदान करता है, सही दिशा निर्देशन करता है। मान हित चिन्तन ही साहित्य का मुख्य उद्देश्य होता है और इस उद्देश्य की पूर्ति प्रत्येक साहित्यकार अपनी कृतियों के माध्यम से करता है।

स्नातकोत्तर हिन्दी का पाठ्यक्रम तैयार करते समय इन बातों का ध्यान रखा गया है कि छात्र जो भविष्य के कर्णधार हैं उन्हें सत्साहित्य से सद्ज्ञयवित्त्व का सही और सर्वाङ्गण विकास हो। इस नवीन पाठ्यक्रम को आज के परिप्रेक्ष्य में समग्र रूप में समझ कर ज्ञानार्जन करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। हिन्दी का साहित्य जितना उन्नत रहा है, वर्तमान साहित्य उसकी दिनानुदिन होने वाली प्रगति का भी सूचक है। हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास से छात्र परिचित हों इस बात को ध्यान में रखते हुए आदि, मध्य और आधुनिक काल की सम्पूर्ण प्रमुख प्रवृत्तियों का इस पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है।

भाषा विकास की दृष्टि से भी हिन्दी विश्व की प्रमुख उन्नत भाषाओं में से एक है। इस भाषा का प्रयोग क्षेत्र विश्व के भाषिक भूगोल में अत्यन्त व्यापक और महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी महत्ता को समझते हुए पाठ्यक्रम में हिन्दी के भाषिक, प्रयोजनमूलक, अनुसंधानमूलक पक्षों को भी

विस्तार के साथ शामिल किया गया है। आज के सन्दर्भ में अनुवाद की आवश्यकता और इसकी महत्ता दोनों ही महसूस की जा रही है इसलिए अनुवाद कला को भी प्रमुखता के साथ पाठ्यक्रम में जगह दी गई है। इसके अतिरिक्त संचार और प्रौद्योगिकी क्रांति के इस युग में छात्रों की दक्षता पत्रकारिता में हो इस बात को ध्यान में रखते हुए पत्रकारिता को अनिवार्य पत्रों में शामिल किया गया है। कार्यालयी और व्यवसायिक पक्षों के अध्ययन हेतु प्रयोजनमूलक हिन्दी को भी पाठ्यक्रम में रखा गया है।

भाषाविज्ञान, संस्कृत काव्यशास्त्र, पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त, संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त नेपाल के हिन्दी लेखक और नेपाल में हिन्दी का इतिहास को भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखा गया है। स्नातकोत्तर के छात्रों को अनुसंधान प्रविधि का ज्ञान आवश्यक जानकर शोधप्रविधि को अनिवार्य पत्र के अन्तर्गत रखा गया है।

विद्यार्थियों के लिए न्यूनतम प्रवेश योग्यता

सेमेस्टर प्रणाली के साथ ही हिन्दी केन्द्रीय विभाग में नामांकन खुला किया जा रहा है। किसी भी ऐसे विश्वविद्यालय, जिन्हें त्रिभुवनविश्वविद्यालय में मान्यता प्राप्त है, के छात्र हिन्दी केन्द्रीय विभाग में नामांकन हेतु आवेदन कर सकते हैं। छात्र को स्नातक की परीक्षा कम से कम द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा। साथ ही स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में नामांकन हेतु छात्र की योग्यता परीक्षण हेतु विभागीय प्रवेश परीक्षा ली जाएगी, जिसमें साहित्य सम्बन्धी सामान्य प्रश्न पूछे जाएंगे। कुल पचीस अंकों की प्रवेश परीक्षा होगी जिसमें २० अंक लिखित एवं ५ अंक मौखिक परीक्षा के लिए होगी।

प्रथम सेमेस्टर

कुल क्रेडिट आवर -१८

१८X१६

पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा

कुल पाठ घंटा =२८८

पत्र	संकेतांक हि.	विषय	क्रेडिट आवर	पाठ घंटा	बाह्य परीक्षा समय	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
१	५५१	हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं आदिकाल	३	४८	३ घंटा		
	हि. ५५१.१	हिन्दी साहित्य का इतिहास		१४			
	हि. ५५१.२	आदिकाल प्रवृत्ति और परिस्थिति		१६			
	हि. ५५१.३	पृथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता एवं रासो ग्रंथ का परिचय, भाषा तथा शशिव्रता विवाह ।		१८			

पत्र	संकेतांक	विषय:	क्रेडिट	पाठ घंटा	बाह्य परीक्षा समय	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
२	हि. ५५२	आदिकालीन साहित्य, कवि और कृति	३	४८	३		
	हि. ५५२.१	सिद्ध साहित्य और जैन साहित्य का परिचय		१२			
	हि. ५५२.२	विद्यापति रचित कीर्तिलता का प्रथम पल्लव तथा व्याख्या		१८			
	हि. ५५२.३	विद्यापति पदावली के चयनित दोहे एवं व्याख्या		१८			

पत्र	संकेतांक	विषय	क्रेडिट	पाठ घंटा	बाह्य परीक्षा समय	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
३	हि. ५५३	भक्तिकाल	आवर ३	४८	३ घंटा		
	हि. ५५३.१	भक्तिकाल की परिस्थितियाँ एवं शाखाएँ		९			
	हि. ५५३.२	निर्गुण धारा, कबीर ग्रंथावली तथा व्याख्या । प्रेमाश्रयी शाखा, पद्मावत के कुछ मुख्य खण्ड, व्याख्या		१३			
	हि. ५५३.३	सगुणधारा, तुलसीदास कृतरामचरितमानस (बालकाण्ड, एवं उत्तरकाण्ड) के चयनित दोहे एवं व्याख्या		१३			
	हि. ५५३.४	सूरदासरचित भ्रमरगीतसार के चयनित पद, व्याख्या ।		१३			

पत्र ४	संकेतांक हि.५५४	विषय रीतिकालीन काव्यधारा तथा आधुनिक हिन्दी का आदिकाल	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आंतरिक ४०
	हि.५५४.१	रीतिकाल परिचय और विशेषताएँ, रीतिमुक्त और रीतिबद्ध कवि		८			
	हि.५५४.२	बिहारी, घनानन्द और रत्नाकर कमशः बिहारी घनानन्दकवित्त और उद्धवशतक तथा व्याख्या		२५			
	हि.५५४.३	आधुनिक हिन्दी का आदिकाल : परिस्थितियाँ और भारतेन्दुयुगीन हिन्दी		१५			
पत्र ५	संकेतांक हि.५५५	विषय : दिवेदीकाल, छायावाद और छायावादोत्तर कविताओं का रूप	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						पूर्णांक १००	बाह्य ६० आंतरिक ४०
	हि.५५५.१	दिवेदीयुगीन काव्य की प्रवृत्ति, प्रमुख लेखक और कवि		१५			
	हि.५५५.२	आधुनिककाल : छायावाद और रहस्यवाद		१५			
	हि.५५५.३	प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अत्याधुनिक कविता		१८			

पत्र ६	संकेतांक हि.५५६	विषय आधुनिककाल(छायावादी काव्यधारा)	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि.५५६.१	जयशंकर प्रसाद का कामायनी,व्याख्या		१४			
	हि.५५६.२	दिनकर रचित उर्वशी का तीसरा अंक, महादेवी वर्मा, सन्धिनिकाव्य संग्रह की चयनित कविता तथा व्याख्या ।		१७			
	हि.५५६.३	निराला के काव्य संग्रहरागविराग की चयनित कविताएँ,पंत के काव्य संग्रह रश्मिबन्धकी चयनित कविताएँ		१७			

द्वितीय सेमेस्टर
पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा

कुल क्रेडिट आवर १२

१२X१६

पाठ घन्टा १९२

पत्र	संकेतांक	विषय	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
७	हि.५५७	छायावादोत्तर काल					
	हि. ५५७.१	प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की विशेषताएँ, प्रमुख कवि		१४			
	हि.५५७.२	नागाजुर्न, नरेश मेहता की चयनित कविता तथा व्याख्या		१७			
	हि.५५७.३	अज्ञेय की चयनित कविता औरदुष्यन्त कुमार का काव्य नाटकएक कण्ठ विषपायी तथा व्याख्या		१७			

पत्र	संकेतांक	विषय	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
८	हि.५५८	गद्य साहित्य					
	हि. ५५८.१	हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, आधुनिक हिन्दी गद्य के प्रतिष्ठापक		१२			
	हि. ५५८.२	भारतेन्दु युग और द्वितीय युग परिचय और प्रवृत्ति		८			
	हि. ५५८.३	हिन्दी गद्य के विकास में मुंशी प्रेमचन्द का योगदान		८			
	हि.५५८.४	आधुनिक हिन्दी गद्य के विविध रूप(उपन्यास, नाटक, आलोचना, निबन्ध, कहानी) का विकास		२०			

पत्र	संकेतांक	विषय	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
९	हि. ५५९	हिन्दी गद्य की विधाएँ : उपन्यास, कथा साहित्य और नाटक साहित्य					

हि. ५५९.१	उपन्यास साहित्य : प्रेमचन्द्र रचित गोदान	९			
हि. ५५९.२	उपन्यास साहित्य : अमृतलाल नागर रचित अमृत और विष	९			
हि. ५५९.३	कथा साहित्य : कुछ चुनिन्दा कहानिया, यही सच है, परिंदे, बादलों के घेरे । बच्चन सिंह की प्रतिनिधि कहानिया, पिता और लाल किले का बाज । रेणु की कहानिया, पुरानी कहानी नया पाठ ।	१२			
हि. ५५९.४	नाटक साहित्य : मोहन राकेशआषाढ का एक दिन, धर्मवीर भारती : अंधा युग, व्याख्या ।	१८			

पत्र १०	संकेतांक हि. ५६०	विषय निबन्ध एवं आलोचना साहित्य	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६०.१	रामचन्द्र शुक्ल : चिन्तामणिभाग १ के पाच निबन्ध		१८			
	हि. ५६०.२	व्याख्या पक्ष		६			
	हि. ५६०.३	हजारी प्रसाद द्विवेदी : अशोक के फूल से तीन पाठ		१८			
	हि. ५६०.४	व्याख्या पक्ष		६			

तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा

कुल क्रेडिट आवर १५

१५X१६

पाठ घन्टा २४०

पत्र ११	संकेतांक हि.५६१	विषय भारतीय काव्यशास्त्र	क्रेडिट आवर ३	पाठ घन्टा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घन्टा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६१.१	काव्य के लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन		१५			
	हि.५६१.२	रस सिद्धान्त		१०			
	हि. ५६१.३	ध्वनि एवं अलंकार सिद्धान्त		८			
	हि. ५६१.४	रीति, वक्रोक्ति एवं औचित्य सिद्धान्त		१५			

पत्र १२	संकेतांक हि.५६२	विषय भाषा विज्ञान	क्रेडिट आवर ३	पाठ घन्टा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घन्टा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६२.१	भाषा, भाषा की उत्पत्ति, भाषा विकास		९			
	हि. ५६२.२	भाषा के विभिन्न रूप, भाषा परिवर्तन एवं परिवर्तन के कारण		१३			
	हि. ५६२.३	भाषाओं का वर्गीकरण, संसार के भाषा परिवार, भाषा विज्ञान की परिभाषा		१३			
	हि. ५६२.४	ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान तथा अर्थ विज्ञान		१३			

पत्र १३	संकेतांक हि. ५६३	विषय हिन्दी भाषा	क्रेडिट आवर ३	पाठ घन्टा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३घन्टा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६३.१	हिन्दी : अर्थ उत्पत्ति एवं विकास, हिन्दी भाषा सामान्य परिचय, हिन्दी भाषा का व्याकरण और उसका इतिहास		१५			
	हि. ५६३.२	हिन्दी भाषा शब्द रचना, वाक्य संरचना, अर्थ संरचना, देवनागरी लिपि एवं मानक हिन्दी के प्रमुख लक्षण		१५			
	हि. ५६३.३	हिन्दी विभाषाएँ तथा बोलियाँ : खड़ी बोली हिन्दी, ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और भोजपुरी		१८			

पत्र १४	संकेतांक हि.५६४	विषय प्रयोजन मूलक हिन्दी और अनुवाद कला	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि.५६४.१	प्रयोजन मूलक हिन्दी : संक्षेपण, व्यापारिक पत्र लेखन, आवेदन, प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण		१६			
	हि. ५६४.२	अनुवाद कला आवश्यकता और औचित्य		१२			
	हि. ५६४.३	अनुवाद का स्वरूप, अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद प्रकार और अनुवाद की सीमाएँ		२०			
पत्र १५	संकेतांक हि. ५६५	विषय : पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६५. १	प्लेटो एवं अरस्तु चयनित सिद्धान्त		१४			
	हि. ५६५. २	वर्ड्सवर्थ और कालरिज के सिद्धान्त		१४			

	हि. ५६५. ३	कोचे और टी. एस. इलियट		१०			
	हि. ५६५.४	आइ. ए. रिचर्डस		१०			

चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा

कुल क्रेडिट आवर १६

१६ह१८

पाठ घंटा २८८

पत्र १६	संकेतांक हि. ५६६	विषय शोध प्रविधि	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६६.१	अनुसंधान के मूल उपकरण, तथ्य एवं अन्वेषण, सिद्धान्त और नियम एवं समस्याओं का चुनाव, प्राक्कल्पना परिभाषा, आत्त सामग्री		१६			
	हि. ५६६.२	योजना के लिए समय देना, समस्या के स्पृहनीय लक्षण, अनुसंधनात्मक अध्ययनों के मूल्यांकन के लिए विचार		१६			
	हि. ५६६.३	आत्त सामग्री की भाषा, समस्याओं की परिभाषा देने में व्यापकता एवं संकीर्णता के लाभ और समस्या का आरम्भिक अन्वेषण		१६			

पत्र १७	संकेतांक हि. ५६७	विषय नेपाल में हिन्दी साहित्य का इतिहास	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि.५६७.१	नेपाल में हिन्दी का इतिहास		१२			
	हि.५६७.२	नेपाल के प्रमुख हिन्दी लेखकों और उनकी कृतियों का परिचय		१८			
	हि.५६७.३	नेपाल में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाएँ एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ		१८			

पत्र १८	संकेतांक हि.५६८	विषय संस्कृत साहित्य का इतिहास	क्रेडिट आवर ३	पाठघंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६८.१	संस्कृत साहित्य का इतिहास और उसका महत्व और वैदिक साहित्य		९			
	हि. ५६८.२	लौकिक साहित्य, महाकाव्य और अन्य विधाओं का सामान्य परिचय		१२			
	हि. ५६८.३	गीतिकाव्य, नाटक, चम्पुकाव्य और गद्य साहित्य		१२			
	हि. ५६८.४	हितोपदेश, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मेघदूत		१५			

पत्र १९	संकेतांक हि. ५६९	विषय पत्रकारिता	क्रेडिट आवर ३	पाठ घंटा ४८	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	पूर्णांक १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	हि. ५६९.१	पत्रकारिता का इतिहास		१०			
	हि. ५६९.२	सिद्धान्त पक्ष		१०			
	हि.५६९.३	प्रयोग पक्ष		१०			
	हि. ५६९.४	नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, वर्तमान में इसकी आवश्यकता और औचित्य, हिन्दी पत्रकारिता की सम्भावनाएँ ।		१८			

पत्र २०	संकेतांक हि. ५७०	विषय अनुसंधान अथवा विशेष पत्र(ऐच्छिक) किसी दो विशेष पत्र का चुनाव	क्रेडिट आवर ६	पाठ घंटा ९६	बाह्य परीक्षा समय ३ घंटा	अनुसंधान हेतु पूर्णांक १०० विशेष पत्र के लिए : १००	
						बाह्य ६०	आन्तरिक ४०
	१	सूरदास : सूरसागर प्रथम खण्ड					
	२	तुलसीदास : विनयपत्रिका					
	३	प्रेमचन्द की प्रतिनिधि कहानियाँ					
	४	महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य					
	५	जैनेन्द्र की कहानियाँ					
	६	उषाप्रियम्बदा के उपन्यास					
	७	लोकसाहित्य और संस्कृति					

चारो सेमेस्टर का कुल क्रेडिट आवर ६३

सेमेस्टर प्रणाली की परीक्षा विश्वविद्यालय के नियमानुसार ही ली जाएगी । प्रत्येक पत्र का पूर्णांक ६० होगा और ४० अंकों की परीक्षा विभागीय होगी । आन्तरिक मूल्यांकन के लिए ४० अंकों का विभाजन निम्न विन्दुओं पर होगा-

परियोजना कार्य

टर्म पेपर

अनुवाद कार्य

गृहकार्य

कक्षा कार्य

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

पेपर प्रस्तुति

कक्षा उपस्थिति

प्रथम सेमेस्टर का सविस्तार पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य का इतिहास और आदिकाल

संकेतांक हि. ५५१

क्रेडिट आवर ३
पाठ घंटा ४८

परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

प्रथम सेमेस्टर का यह प्रथम पत्र हिन्दी साहित्य के इतिहास का सम्यक अनुशीलन कराने में सक्षम होगा। काल विभाजन और नामकरण की समस्या के साथ आदिकाल की मुख्य प्रवृत्ति और कृतियों का अध्ययन कराना इस पत्र का उद्देश्य है। आदिकाल में विशेषकर काव्य के क्षेत्र में जो प्रवृत्तियाँ पनपी उनका दीर्घकालीन असर हुआ। अध्ययन अध्यापन की दृष्टि से इस पत्र को तीन भागों में बाटा गया है। अंक विभाजन हेतु पत्र को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। सभी प्रश्न तीनों भागों पर आधारित होंगे। खण्ड क से चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होंगे और खण्ड ख से चार लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे।

अंक विभाजन :

(क) आलोचनात्मक/दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

(ख) व्याख्या अथवा लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

कुल ६० अंक।

पाठ्यांश

हिन्दी साहित्य का इतिहास

हि. ५५१.१: हिन्दी साहित्य के इतिहास की पृष्ठभूमि, कालविभाजन की समस्या एवं नामकरण की समस्या ।

हि. ५५१.२ : आदिकाल की प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ(अपभ्रंश और पिंगल काव्य, वीर महाकाव्य एवं रासो की व्युत्पत्ति

हि. ५५१.३ : पृथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता और भाषा एवं शशिव्रता विवाह प्रस्ताव ।

पाठ्य पुस्तक एवं सहायक पुस्तक :

१. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ना.प्र. सभा काशी ।
२. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।
३. " हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, राजकमल प्र. दिल्ली ।
४. " हिन्दी साहित्य का आदिकाल, राजकमल प्र. दिल्ली ।
५. मिश्र, विश्वनाथप्रसाद, हिन्दी साहित्य का अतीत, वाणीविलास, वाराणसी ।
६. वर्मा, रामकुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास ।
७. वाष्णीय, लक्ष्मीसागर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोक भारती इलाहाबाद ।
८. कपूर श्यामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली ।
९. द्विवेदी हजारी प्रसाद, पृथ्वीराज रासो ।

प्रथम सेमेस्टर

आदिकालीन साहित्य, कवि, कृति

संकेतांक हि. ५५२

क्रेडिट आवर ३

पाठ घंटा ४८

उद्देश्य

आदिकाल में काव्य के क्षेत्र में जो प्रवृत्तियाँ पनपी उनका दीर्घकालीन असर हुआ। सिद्ध साहित्य और जैन साहित्य का हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान है। इस पत्र में विद्यापति के काव्य ग्रंथ को भी शामिल किया गया है। अध्ययन अध्यापन की दृष्टि से इस पत्र को तीन भागों में बाँटा गया है। अंक विभाजन हेतु पत्र को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। सभी प्रश्न तीनों भागों पर आधारित होंगे। खण्ड क से चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होंगे और खण्ड ख से चार लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे।

अंक विभाजन :

(क) आलोचनात्मक/दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

(ख) व्याख्या अथवा लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

कुल ६० अंक।

पाठ्यांश

५५२.१ : सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य का संक्षिप्त परिचय।

५५२.२ : विद्यापति रचित कीर्तिलता (प्रथम पल्लव)।

५५३.३ : विद्यापति पदावली के कुछ चयनित पद यथा : १, १२, १८, २०, २३, २४, २५, २९, ३६, ५०, ५१, ५९, ७०, ७६, ८६, ९१, ९४, ९६, १११, १४३

पाठ्य पुस्तकें

१ . शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ना. प्र. सभा वाराणसी

२ . सिंह शिवप्रसाद, कीर्तिलता : विद्यापति।

३ . बेनीपुरी, रामबृक्ष, विद्यापति की पदावली।

४ . मिश्र, उमेश, विद्यापति।

प्रथम सेमेस्टर
भक्तिकाल

संकेतांक हि. ५५३

क्रेडिट आवर ३

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्णयुग माना गया है। यह वह युग था जिसमें मुख्यतः भागवत धर्म के प्रचार तथा प्रसार के परिणामस्वरूप भक्तिआन्दोलन का सूत्रपात हुआ था और उसकी लोकोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण धीरे-धीरे लोक प्रचलित भाषाएँ भक्तिभावना की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती गईं और कालान्तर में भक्तिविषयक विपुल साहित्य की बाढ़ सी आ गई। हिन्दी साहित्य के इस पक्ष से छात्रों को अवगत कराना इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है। इस पत्र को चार भागों में बाटा गया है। अंकों के विभाजन हेतु दो खण्डों में बाटा गया है। प्रश्न चारों भागों पर आधारित होंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे।

खण्ड (क) आलोचनात्मक/दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

(ख) व्याख्या अथवा लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

कुल : ६० अंक

पाठ्यांश

हि. ५५३.१ : भक्तिकाल की सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक परिस्थितियाँ, भक्तिकाल का महत्व।

हि. ५५३.२ : भक्तिकाल की प्रमुख शाखाएँ, निर्गुण शाखा(ज्ञानाश्रयी शाखा), कबीर की साखियाँ : आरम्भिक ६० साखियाँ, प्रेमाश्रयी शाखा, पद्मावत(नखशिख वर्णन, नागमती वियोग खण्ड)

हि. ५५३.३ : सगुण धारा : तुलसीदास रचित ...रामचरित मानस' : बालकाण्ड(१ से ५०) तक, उत्तरकाण्ड(१०३ से १४०) तक

हि. ५५३.४ : सूरदास का ...भ्रमरगीतसार'(आरम्भिक ७५ पद)

पाठ्यपुस्तक एवं सहायक पुस्तक :

१. दास, श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली

२. शुक्ल रामचन्द्र, जायसी ग्रंथावली, ना. प्र. स. काशी ।
३. तुलसीदास, रामचरितमानस गीताप्रेस, गोरखपुर ।
४. शुक्ल रामचन्द्र, भ्रमरगीतसार, ना. प्र. स. काशी ।
५. शुक्ल, रामचन्द्र, गोस्वामी तुलसीदास, ना. प्र. स. काशी ।
६. मिश्र विश्वनाथप्रसाद, गोसाईं तुलसीदास, वाणी वितान वाराणसी ।
७. सिंह उदयभानु, तुलसी काव्यमीमांसा, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली ।
८. वाजपेयी, नन्ददुलारे वाजपेयी, महाकवि सूरदास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।
९. दिवेदी, हजारी प्रसाद, सूरसाहित्य हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर मुम्बई ।
१०. शर्मा हरवंशलाल, सूर और उनका साहित्य, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ ।
११. शुक्ल रामनारायण, भक्ति काव्य : स्वरूप और संवेदना, वाराणसी ।

प्रथम सेमेस्टर

रीतिकालीन एवं आधुनिक हिन्दी का आदिकाल

संकेतांक हि. ५५४
पूर्णांक६०

क्रेडिट आवर ३

पाठ घंटा४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

रीतिकालीन काव्य को श्रृंगारिक रूप दे हुए रीतिकालीन कवियों ने उसे जन जन तक पहुँचाया । रीतिकालीन काव्य ने हिन्दी काव्य जगत को और भी समृद्ध बनाया है । इस पत्र में रीतिकालीन कवियों के अन्तर्गत रीतिमुक्त और रीतिबद्ध कवियों को शामिल किया गया है जिससे छात्र इस काल की दोनों प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे । साथ ही इस पत्र में आधुनिक हिन्दी काल के आदिकाल को भी समाविष्ट किया गया है । जिसके अन्तर्गत उस समय की सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के साथ ही भारतेन्दुयुगीन काव्यधारा का सम्यक अध्ययन कराने का प्रयास किया गया । अन्य पत्रों की तरह इस पत्र को भी तीन भागों में बाँटा गया है । प्रश्न सभी भागों पर आधारित होंगे और वो अनिवार्य होंगे । अंकों का विभाजन दो खण्डों में किया जाएगा ।

खण्ड (क) आलोचनात्मक अथवा दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड (ख) व्याख्या अथवा लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

हि. ५५४.१ : रीतिकाल का परिचय, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कवियों एवं उनकी कृतियों का परिचय ।

हि. ५५४.२ : बिहारी(आरम्भ के ५० पद), घनानन्दकवित्त(आरम्भ से २५छन्द), रत्नाकर कृत उद्धवशतक(मंगलाचरण और छन्द सं.१, ७, १२, १५, १९, २०, २६, २७, ३०, ३८ तक । व्याख्या पक्ष ।

हि. ५५४.३ : आधुनिक हिन्दी का आदिकाल राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितिया, महर्षि दयानन्द और हिन्दी । भारतेन्दु युग : आधुनिक हिन्दी कविता का उद्भव और विकास, भारतेन्दुयुगीन कविता की विशेषताए ।

पाठ्य पुस्तक एवं सहायक पुस्तक :

१. मिश्र विश्वनाथ प्रसाद, बिहारी, वाणी वितान, वाराणसी
२. मिश्र विश्वनाथ प्रसाद, घनानन्द कवित्त, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर, वाराणसी
३. रत्नाकर जगन्नाथ, उद्धवशतक
४. सिंह बच्चन, बिहारी का नया मुल्यांकन, लोकभारती इलाहाबाद
५. सिंह बच्चन, रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना, ना. प्र. स.
६. गौड P मनोहरलाल, घनानन्द स्वच्छन्द काव्यधारा, ना. प्र. स.
७. दिव्दी सूर्यनारायण, रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त
८. सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास
९. मिश्र विश्वनाथ, हिन्दी साहित्य का अतीत
१०. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिसिंग हाउस दिल्ली ।

प्रथम सेमेस्टर

दिवेदीकाल, छायावाद और छायावादोत्तर कविताएँ

संकेतांक हि.५५५

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

हिन्दी साहित्य के इतिहास में दिवेदी युग और छायावाद को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह वह युग था जब खड़ी बोली हिन्दी अपना परिष्कृत रूप ले रही थी। इन परिस्थितियों का अनुशीलन ही इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है। इस पत्र को भी अन्य पत्रों की तरह तीन भागों में बाटा गया है। अंकों का विभाजन दो खण्डों में किया गया है।

खण्ड (क) दीर्घउत्तरीय अथवा आलोचनात्मक प्रश्न : ४० अंक

खण्ड (ख) लघुउत्तरीय अथवा व्याख्या पक्ष : २० अंक।

हि. ५५५.१ : दिवेदी युग और उस युग की काव्यधारा, लेखक और कवि, छायावाद और रहस्यवाद का परिचय। आधुनिक काल।

हि. ५५५.२ : छायावाद और रहस्यवाद परिचय।

हि. ५५५.३ : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अत्याधुनिक कविता।

पाठ्यपुस्तकें

१ . वाष्णेय, लक्ष्मी सागर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती , इलाहाबाद।

२ . कपूर श्यामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली।

३ . श्री वास्तव परमानन्द(संपादक), समकालीन हिन्दी आलोचना, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

प्रथम सेमेस्टर

आधुनिक काल(छायावादी काव्यधारा)

हि. संकेतांक ५५६

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य

यह छायावाद के मूर्धन्य कवियों की रचनाओं का अध्ययन कराने में सक्षम होगा। छायावाद के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्तत्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पंत और महादेवी की कृतियों का छात्र अध्ययन करेंगे। इस पत्र के भी तीन भाग हैं। अंकों का विभाजन दो खण्डों में किया गया है। प्रश्न सभी भागों पर आधारित होंगे और अनिवार्य होंगे।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय अथवा आलोचनात्मक प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय अथवा व्याख्या पक्ष : २० अंक

हि. ५५६.१ : आधुनिक काल(छायावादी काव्यधारा) प्रसाद रचित कामायनी(केवल चिन्ता और श्रद्धा सर्ग) तथा व्याख्या।

हि. ५५६.२ : दिनकर रचित उर्वशी का तृतीय अंक और महादेवी वर्मा(सन्धिनी) की निशा को धो देता राकेश, चुभते ही तेरा अरुणबाण, प्रिय सान्ध्य गगन मेरा जीवन तथा व्याख्या।

हि. ५५६.३ : निराला(राग विराग) की जुही की कली, सरोज स्मृति, तोड़ती पत्थर,

पंत(रश्मिबन्ध) की मौन निमंत्रण, ताज, आ: धरती कितना देती है, अनित्य जग तथा व्याख्या।

पाठ्य पुस्तक एवं सहायक पुस्तक :

१. जयशंकर प्रसाद, कामायनी

२. रामधारी सिंह दिनकर, उर्वशी
३. वर्मा रामकुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
४. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास ।
५. निराला, राग विराग
६. वर्मा महादेवी, सन्धिनी ७. पंत, रश्मिबन्ध

द्वितीय सेमेस्टर का सविस्तार पाठ्यक्रम

छायावादोत्तर काल

हि. संकेतांक ५५७

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

यह पत्र छायावादोत्तर काल का अनुशीलन करने में सक्षम होगा। छायावाद काल के बाद काव्य की दो प्रमुख धाराएँ बही जिसने हिन्दी काव्यधारा को एक नई पहचान दी। इस पत्र के तीन भाग होंगे। प्रश्नपत्र सभी भागों पर आधारित होंगे और अनिवार्य होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में होगा।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय और आलोचनात्मक प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : व्याख्या पक्ष : २० अंक।

हि. ५५७.१ : प्रयोगवाद और प्रगतिवाद की प्रवृत्ति और विशेषता, प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय।

हि. ५५७.२ : नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ, बहुत दिनों के बाद, अकाल और उसके बाद, शासन की बन्दूक।

नरेश मेहता (तू मेरा मौन है) की प्रारम्भिक तीन कविताएँ। सम्बन्धित व्याख्या पक्ष।

हि. ५५७.३ : दुष्यन्त कुमार एक कण्ठ विषपायी -काव्य नाटक, और अज्ञेय की देहरी पर, साम्राज्ञी का नैवेद्य, नदी के द्वीप। सम्बन्धित व्याख्या पक्ष।

ती इलाहाबाद

७. गुप्त जगदीश, नयी कविता : स्वरूप और संवेदना

पाठ्य पुस्तक एवं सहायक पुस्तक :

१. सिंह नामवर, नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएँ
२. मेहता नरेश, तू मेरा मौन है, लोकभारती इलाहाबाद
३. कुमार दुष्यन्त, एक कण्ठ विषपायी, लोकभारती इलाहाबाद
४. चतुर्वेदी रामस्वरूप, आधुनिक कविता यात्रा, लोकभारती इलाहाबाद
५. वर्मा लक्ष्मीकान्त, नयी कविता के प्रतिमान, लोक भारती इलाहाबाद
६. श्रीवास्तव मीरा, आधुनिकता के आगे श्री नरेश मेहता, लोकभारती

द्वितीय सेमेस्टर

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास

हि. संकेतांक ५५८

क्रेडिट आवर ३ पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

यह पत्र हिन्दी साहित्य के गद्य साहित्य पर आधारित है। भारतेन्दु युग और द्वितीय युग की हिन्दी गद्य का सम्यक् अनुशीलन इसका मुख्य ध्येय है। अन्य पत्रों की तरह ही इसे भी चार मुख्य भागों में बाटा गया है। प्रश्न पत्र सभी भागों पर आधारित होंगे। अंक विभाजन हेतु इसके दो खण्ड किए गए हैं।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय अथवा आलोचनात्मक प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक।

पाठ्यांश

हि. ५५८.१ : हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, १९ वीं शताब्दी के कुछ प्रमुख लेखक

हि. ५५८.२ : भारतेन्दु युग और द्वितीय युग में हिन्दी गद्य का प्रचार और प्रसार।

हि. ५५८.३ : हिन्दी गद्य के विकास में मुंशी प्रेमचन्द का योगदान।

हि. ५५८.४ : आधुनिक हिन्दी गद्य के विविध रूप। उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबन्ध, नाटक संस्मरण आदि विधाओं का विकास।

पाठ्यपुस्तक एवं सहायक ग्रंथ :

१. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास
२. द्वितीय हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका
३. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, राजकमल
४. शर्मा नलिनविलोचन, साहित्य का इतिहास

द्वितीय सेमेस्टर

उपन्यास, कथा एवं नाटक साहित्य

हि. संकेतांक ५५९

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

इस पत्र में साहित्य के विविध अंग जिनमें उपन्यास, कहानी और नाटक को अध्ययन हेतु शामिल किया गया है इन तीनों विधाओं में हिन्दी साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। कुछ प्रमुख उपन्यासकार और नाटककार की कृतियों का अध्ययन कराना इस पत्र का लक्ष्य है। इस पत्र के भी चार भाग किए गए हैं। प्रश्न सभी भाग से पूछे जाएंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है।

खण्ड क : आलोचनात्मक अथवा दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : व्याख्या पक्ष : २० अंक

पाठ्यांश

हि.५५९.१ : उपन्यास साहित्य : प्रेमचन्द रचित गोदान

हि.५५९.२ : अमृतलाल नागर रचित अमृत और विष का समग्र अध्ययन।

हि. ५५९.३ : कथा साहित्य : एक दुनिया समानान्तर से बादलों के घेरे, यही सच है, परिंदे

बच्चन सिंह की प्रतिनिधि कहानिया : पिता और लाल किले का बाज

फणीश्वरनाथ रेणु, पुरानी कहानी नया पाठ, मारे गए गुलफाम।

हि. ५५९.४ : नाटक साहित्य :मोहन राकेश : आषाढ का एक दिन

धर्मवीर भारती : अंधा युग । सम्बन्धित व्याख्या ।

पाठ्यपुस्तक एवं सहायक ग्रंथ :

१. प्रेमचन्द, गोदान
२. राय, अमृत, प्रेमचन्द कलम का सिपाही
३. बाजपेयी नन्ददुलारे, प्रेमचन्द साहित्यिक विवेचन
४. राय, जनार्दन प्रसाद, प्रेमचन्द की उपन्यास कला ।
५. नागर अमृतलाल, अमृत और विष
६. मिश्र रामदरश, हिन्दी उपन्यास
७. गणेशन, हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन
८. यादव राजेन्द्र, एक दुनिया समानान्तर
९. सिंह बच्चन, प्रतिनिधि हिन्दी कहानियाँ
१०. रेणु फणीश्वरनाथ, प्रतिनिधि कहानियाँ
११. सिंह, नामवर, कहानी नई कहानी
१२. राकेश मोहन, आषाढ का एक दिन
१३. भारती धर्मवीर, अंधा युग
१४. त्रिपाठी वशिष्ठ नारायण, नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान
१५. ओझा, दशरथ, हिन्दी नाटक उद्भव और विकास, राजपाल एण्ड सन्स ।

द्वितीय सेमेस्टर

निबन्ध एवं आलोचना साहित्य

हि. संकेतांक ५६०

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

हिन्दी का निबन्ध और आलोचना साहित्य आज एक प्रमुख विधा के रूप में अपना स्थान बना चुका है। अतः एम. ए. स्तर के छात्रों को इस विधा की विस्तृत जानकारी तथा गम्भीर अध्ययन हेतु इसे अलग पत्र के अन्तर्गत रखा गया है। इस पत्र में रामचन्द्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की कुछ एक रचनाओं को अध्ययन हेतु शामिल किया गया है। इस पत्र को चार भागों में बाटा गया है। चारों भागों पर आधारित प्रश्नपत्र पूछे जाएंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। अंक विभाजन दो खण्डों में विभक्त है।

खण्ड क : आलोचनात्मक अथवा दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४०अंक

खण्ड ख : व्याख्या अथवा लघुउत्तरीय प्रश्न : २०अंक।

पाठ्यांश :

हि.५६०.१ : रामचन्द्र शुक्ल : चिन्तामणि : भाव या मनोविकार, लोभ और प्रीति, उत्साह और कविता क्या है।

हि.५६०.२ : व्याख्या पक्ष

हि.५६०.३ : हजारी प्रसाद द्विवेदी : अशोक के फूल : बसन्त आ गया, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है, भारतीय संस्कृति की देन।

हि.५६०.४ : व्याख्या पक्ष।

पाठ्यपुस्तक एवं सहायक ग्रंथ :

१. शर्मा रामविलास, रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन दिल्ली

२. मलयज, रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन दिल्ली

३. यादव चौथीराम, आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी का साहित्य, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
४. दिवेदी हजारी प्रसाद, अशोक के फूल
५. शुक्ल, रामचन्द्र चिन्तामणि भाग १
६. सिंह काशीनाथ, आलोचना भी रचना है ।

तृतीय सेमेस्टर का सविस्तार पाठ्यक्रम

भारतीय काव्यशास्त्र

हि. संकेतांक ५६१

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

यह पत्र भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन कराने में समर्थ है। इस पत्र में छात्रों से भारतीय काव्यशास्त्र के सम्यक अध्ययन की अपेक्षा की जाती है। साहित्य में नाटक, काव्य आदि विभिन्न विधाओं एवं रस अलंकारादि सम्बन्धी भारतीय आचार्यों के मतों का अनुशीलन कराना इस पत्र का उद्देश्य है। इस पत्र को चार भागों में बाटा गया है। सभी भाग महत्वपूर्ण हैं और प्रश्नपत्र इन सभी पर आधारित होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में बाटा गया है।

खण्ड क : आलोचनात्मक अथवा दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४०अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

पाठ्यांश

हि.५६१.१ : काव्य के लक्षण : शब्दार्थो सहितौ काव्यम्(भामह)

तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि(मम्मट)

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्(विश्वनाथ)

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्द काव्यम्(पण्डितराज जगन्नाथ),

काव्य हेतु : प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं अभ्यास

काव्य प्रयोजन

हि.५६१.२ : रस सिद्धान्त : रस सम्प्रदाय का इतिहास, रस की अवधारणा, रसनिष्पत्ति, रसानुभूति की प्रक्रिया, साधारणीकरण

ह्रि५६१.३ : ध्वनि सिद्धान्त : ध्वनि सिद्धान्त का इतिहास, काव्य की आत्मा, ध्वनि एवं अन्य सम्प्रदाय ।
अलंकार सिद्धान्त : अलंकार सम्प्रदाय का इतिहास, अलंकार की अवधारणा, वर्गीकरण, अलंकार एवं अन्य सम्प्रदाय ।

ह्रि५६१.४ : रीति सम्प्रदाय : रीति सिद्धान्त का इतिहास, रीति की अवधारणा ।

वक्रोक्ति सिद्धान्त : इतिहास, अवधारणा, भेद, वक्रोक्ति एवं अन्य काव्य सिद्धान्त ।

औचित्य सिद्धान्त : इतिहास, औचित्य एवं अन्य काव्यशास्त्र ।

पाठ्यपुस्तक

१. नगेन्द्र, भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, नेशनल पब्लिसिंग हाउस
२. व्यास भोलाशंकर, ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धान्त, चौखम्भा वाराणसी
३. नगेन्द्र, रस सिद्धान्त
४. गुप्त गणपतिचन्द्र, रस सिद्धान्त का पुनर्विवेचन, लोकभारती इलाहाबाद
५. शुक्ल रामचन्द्र, रस मीमांसा, ना. प्र. स. काशी
६. मिश्र भगीरथ, काव्यशास्त्र

तृतीय सेमेस्टर

भाषा विज्ञान

संकेतांक हि. ५६२

क्रेडिट आवर ३ पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

यह पत्र भाषाविज्ञान के सैद्धान्तिक पक्षों, उसका इतिहास तथा कुछ प्रायोगिक पक्षों का अध्ययन कराने में सक्षम होगा। भाषा के सभी पक्षों को इसमें समाविष्ट करने की कोशिश की गई है, जिससे छात्रों को सम्यक जानकारी हासिल हो सके। इस पत्र को चार भागों में बाटा गया है। प्रश्न सभी भागों पर आधारित होंगे साथ ही अंक विभाजन दो खण्डों में बाटा गया है।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

पाठ्यांश :

हि.५६२.१ : भाषा की उत्पत्ति और विकास, भाषा का उपयोग।

हि.५६२.२ : भाषा के विभिन्न रूप, भाषा और बोली, भाषा की परिवर्तनशीलता, परिवर्तन के कारण

हि.५६२.३ : भाषाओं का वर्गीकरण, संसार के भाषा परिवार, भाषाविज्ञान की परिभाषा

हि.५६२.४ : ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान तथा भाषा विज्ञान का इतिहास।

पाठ्यपुस्तक :

१. शर्मा देवेन्द्रनाथ, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

२. शर्मा राजमणि, आधुनिक भाषाविज्ञान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

३. तिवारी भोलानाथ, भाषाविज्ञान, किताब महल इलाहाबाद

५. सक्सेना बाबुराम, सामान्य भाषाविज्ञान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

६. तिवारी उदयनारायण, भाषाविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास, भारती भण्डार, इलाहाबाद

तृतीय सेमेस्टर

हिन्दी भाषा

हि. संकेतांक ५६३

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

इस पत्र में हिन्दी भाषा के विकास एवं संरचना पर विशेष ध्यान दिया गया है। हिन्दी भाषा से जुड़ी जानकारी देना इस पत्र का लक्ष्य है। हिन्दी का मानक रूप और उसकी विभाषा एवं बोलियों का सम्यक अध्ययन इस पत्र में कराया जाएगा। इस पत्र को भी तीन भागों में बाटा गया है। अंक विभाजन दो खण्डों में किए गए हैं। सभी इकाई महत्वपूर्ण है और सारे प्रश्न अनिवार्य होंगे।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक।

पाठ्यांश :

हि. ५६३.१ : हिन्दी : अर्थ उत्पत्ति और विकास, हिन्दी भाषा सामान्य परिचय, हिन्दी भाषा का व्याकरण और उसका इतिहास

हि. ५६३.२ : हिन्दी भाषा : शब्द संरचना, वाक्य संरचना, अर्थ संरचना, देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा का मानकीकरण, मानक हिन्दी के प्रमुख अभिलक्षण।

हि. ५६३.३ : हिन्दी विभाषाएँ तथा बोलियाँ : खड़ी बोली हिन्दी, ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली, भोजपुरी।

पाठ्य पुस्तकें :

१. तिवारी उदयनारायण, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, लोकभारती इलाहाबाद

२. जैन महावीर शरण, भाषा एवं भाषा विज्ञान, लोकभारती इलाहाबाद

३. तिवारी भोलानाथ, हिन्दी भाषा और नागरी लिपि, लोकभारती, इलाहाबाद

४. त्रिवेदी जयेन्द्र, हिन्दी रूपरचना, लोकभारती इलाहाबाद

५. सिंहल, डा. ओमप्रकाश, व्यावहारिक हिन्दी

तृतीय सेमेस्टर

हि. संकेतांक ५६४

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य

इस पत्र में प्रयोजनमूलक हिन्दी को शामिल किया गया है जिससे छात्र कार्यालयी हिन्दी से अवगत हो सकें। अनुवाद की महत्ता सदियों से रही है और यह आज के परिवेश में भी सांदिर्भिक है। इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इस पत्र में इसे शामिल किया गया है। इस पत्र को चार भागों में बाटा गया है। अंक विभाजन दो खण्डों में किए गए हैं। सभी भाग महत्वपूर्ण हैं और सारे प्रश्न अनिवार्य होंगे।

पाठ्यांश

हि. ५६४.१ : प्रयोजनमूलक हिन्दी : संक्षेपण, व्यवसायिक पत्रलेखन, आवेदनपत्र, प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण।

हि. ५६४.२ : अनुवाद की आवश्यकता और औचित्य।

हि. ५६४.३ : अनुवाद का स्वरूप, अनुवाद प्रक्रिया, प्रकार और अनुवाद की सीमाएँ।

पाठ्यपुस्तक

१ . श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, प्रयोजनमूलक हिन्दी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

२ . श्रीवास्तव, गोपीनाथ, सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

३ . कंसल, हरिबाबू, प्रशासनिक हिन्दी निपूणता, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

४ . जी. गोपीनाथन, अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग।

५. सिंहल, डा. ओमप्रकाश, व्यावहारिक हिन्दी

तृतीय सेमेस्टर

पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त

हि. संकेतांक ५६५

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त और उसके प्रमुख विद्वानों के मतों का अध्ययन इस पत्र का मुख्य लक्ष्य है । इस पत्र के भी चार भाग किए गए हैं । प्रश्न इन चारों पर आधारित होंगे । अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है । सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे ।

खण्ड : क आलोचनात्मक अथवा दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड : ख लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

पाठ्यांश :

हि.५६५.१ : प्लेटो : काव्य प्रेरणा, अनुकृति और काव्य पर आरोप

अरस्तु : अनुकृति की परिभाषा, विरेचन और प्लेटो एवं अरस्तु

हि.५६५.२ : वर्डस्वर्थ : काव्यभाषा का सिद्धान्त

कालरिज : कल्पना और फैंसी

हि.५६५.३ : क्रोचे : अभिव्यंजनावाद

टी. एस. इलियट : परम्परा की परिकल्पना, परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त ।

हि.५६५.४ : आई. ए. रिचर्डस : मूल्य सिद्धान्त, सम्प्रेषण सिद्धान्त । स्वच्छन्दतावाद, यथार्थवाद, नई समीक्षा ।

पाठ्यपुस्तक :

१. शर्मा, देवेन्द्रनाथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली

२. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तक, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली

३. तिवारी रामपूजन, पाश्चात्य साहित्य शास्त्र

४. नगेन्द्र, पाश्चात्य समीक्षा शास्त्र : सिद्धान्त और परिदृश्य

चतुर्थ सेमेस्टर का सविस्तार पाठ्यक्रम

शोधप्रविधि

हि. संकेतांक ५६६

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

एम. ए. के छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान की तकनीकी जानकारी से अवगत कराना ही इस पत्र का लक्ष्य है। अनुसंधान कौशल के विकास हेतु शोधप्रविधि का ज्ञान छात्रों के लिए आवश्यक है। इस पत्र के भी तीन भाग हैं और प्रश्न इन सभी से पूछे जाएंगे।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक।

पाठ्यांश :

हि. ५६६.१ : अनुसंधान के मूल उपकरण : प्राक्कल्पना, परिभाषा, आत्त सामग्री, तथ्य एवं अन्वेषण, सिद्धान्त और नियम, योजना के लिए समय देना। समस्याओं का चुनाव, समस्या के आवश्यक लक्षण।

हि. ५६६.२ : योजना के लिए समय देना, समस्या के स्पष्टणीय लक्षण, अनुसंधानात्मक अध्ययनों के लिए विचार।

हि. ५६६.३ : आत्त सामग्री की भाषा, समस्याओं की परिभाषा देने में व्यापकता एवं संकीर्णता के लाभ, समस्या का आरम्भिक अन्वेषण

पाठ्यपुस्तक :

१. डा. गणेशन, अनुसंधान प्रविधि, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
२. सिंह विजयपाल, हिन्दी अनुसंधान, लोक भारती इलाहाबाद
३. सिंह कन्हैया, हिन्दी पाठानुसंधान, लोक भारती, इलाहाबाद

चतुर्थ सेमेस्टर

नेपाल में हिन्दी साहित्य का इतिहास

हि. संकेतांक ५६७

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षका समय ३ घन्टा

उद्देश्य

नेपाल में हिन्दी का क्या इतिहास रहा है छात्रों को इस पत्र में यह अवगत कराया गया है। इस पत्र को तीन भाग में बाटा गया है। प्रश्न तीनों भाग पर आधारित होंगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

पाठ्यांश

हि. ५६७.१ : नेपाल में हिन्दी का इतिहास

हि. ५६७.२ : नेपाल के प्रमुख हिन्दी लेखक तथा उनकी कृतियों का परिचय

हि. ५६७.३ : नेपाल में हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ।

पाठ्यपुस्तक :

१ . मिश्र, कृष्णचन्द्र, नेपाल में हिन्दी, प्रकाशन विद्या विहार, दिल्ली

२ . ठाकुर डा. उषा, हिन्दी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

३ . गोप. डा. सूर्यनाथ, नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, किताब महल इलाहाबाद

४ . राकेश, डा. रामदयाल, नेपाल के हिन्दी लेखक, प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी ।

चतुर्थ सेमेस्टर

संस्कृत साहित्य का इतिहास और साहित्य का सामान्य अध्ययन

हि. संकेतांक ५६८

क्रेडिट आवर ३

पूर्णांक ६०

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

हिन्दी की जननी भाषा संस्कृत है और इसका एक समृद्ध साहित्य है। संस्कृत साहित्य और उसके इतिहास की सामान्य जानकारी हिन्दी छात्रों के लिए आवश्यक समझते हुए इस पत्र को तैयार किया गया है क्योंकि हिन्दी की अनेक परम्पराओं का स्रोत प्राचीन संस्कृत भाषा और साहित्य से उपलब्ध होता है। इस पत्र को चार भागों में बाटा गया है। इन चारों भागों पर ही आधारित प्रश्नपत्र पूछे जाएंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। अंक विभाजन दो खण्डों में किया गया है।

खण्ड क : आलोचनात्मक अथवा दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : लघुउत्तरीय प्रश्न : २० अंक

पाठ्यांश :

हि.५६८.१ : संस्कृत साहित्य का इतिहास और उसका महत्व। वैदिक साहित्य : संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद और वेदांग

हि.५६८.२ : लौकिक साहित्य : बाल्मीकिय रामायण और महाभारत अन्य महाकाव्य और काव्यकार एवं अन्य विधाओं का सामान्य परिचय।

हि.५६८.३ : प्रमुख गीतिकाव्य, काव्य नाटक, चम्पुकाव्य, गद्य साहित्य और प्रमुख साहित्यकार।

हि.५६८.४ : हितोपदेश(मित्रलाभ), अभिज्ञान शाकुन्तलम(चतुर्थ अंक), मेघदूत(प्रथम खण्ड)

पाठ्यपुस्तक :

१. कीथ, ए. बी. संस्कृत साहित्य का इतिहास, मोतीलाल, बनारसीदास दिल्ली
२. उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा मन्दिर, वाराणसी
३. व्यास भोलाशंकर, संस्कृत कवि दर्शन, चौखम्भा वाराणसी ।
४. आचार्य, नारायण राम, हितोपदेश, निर्णय सागर, मुम्बई
५. अभिज्ञान शाकुन्तलम
६. कालिदास, मेघदूत

चतुर्थ सेमेस्टर

पत्रकारिता

हि. संकेतांक ५६९
पूर्णांक ६०

क्रेडिट आवर ३

पाठ घंटा ४८

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

इस पत्र का उद्देश्य छात्रों को पत्रकारिता सम्बन्धि सम्पूर्ण जानकारी देना है। पत्रकारिता के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे अनिवार्य पत्र के रूप में रखा गया है। इस पत्र में पत्रकारिता के इतिहास और सिद्धान्त पक्ष के साथ ही उसके प्रयोग पक्ष की जानकारी दी गई है। साथ ही नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता का क्या इतिहास रहा है इसकी जानकारी भी देने का प्रयास किया गया है। इसे भी चार भागों में बाटा गया है। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे और अंक विभाजन तीन खण्डों में किया गया है।

खण्ड क : दीर्घउत्तरीय प्रश्न : ४० अंक

खण्ड ख : सिद्धान्त पक्ष के प्रश्न : १० अंक

खण्ड ग : प्रयोग पक्ष के प्रश्न हेतु : १० अंक

पाठ्यांश :

हि. ५६९.१ : इतिहास : हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास, प्रमुख हिन्दी पत्र : उदन्त मार्तण्ड, कवि वचन सुधा, हिन्दी प्रदीप, ब्राह्मण, सरस्वती, कर्मवीर, प्रताप, हंस, माधुरी, मतवाला, पत्रकार : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, महामना मदन मोहन मालवीय, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबुराम विष्णुराव पराडकर, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी।

हि. ५६९.२ : सिद्धान्त : समाचार की परिभाषा, समाचार संकलन और संपादन, समाचार के विभिन्न स्रोत, भेटवार्ता के प्रकार और उनकी प्रविधि, शीर्षक का, फीचर लेखन का स्वरूप और उद्देश्य, समाचार लेख संपादन, संपादकीय लेख तथा टिप्पणियों का लेखन, मेकअप, प्रुफ संशोधन, मुद्रण कला का सामान्य ज्ञान।

हि. ५६९.३ : प्रयोग : पत्रकारिता का व्यवहारिक ज्ञान, समाचार कैसे बनाएँ, शीर्षक कैसे दें, अनुवाद की प्रविधि, संक्षिप्तीकरण, संपादकीय लेखन और टिप्पणी लेखन का अभ्यास, पत्रों के विभिन्न स्तम्भ, प्रुफ संशोधन, पत्र की साज सज्जा, आवरण सज्जा।

हि. ५६९.४ : नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास । वर्तमान में इसकी आवश्यकता और औचित्य, हिन्दी पत्रकारिता की सम्भावना ।

पाठ्यपुस्तक :

१. बाजपेयी अम्बिका प्रसाद, हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास
२. मिश्र हेरम्ब, सम्पूर्ण पत्रकारिता
३. त्रिपाठी कमलापति, पत्र और पत्रकार
४. मिश्र, कृष्णबिहारी, हिन्दी पत्रकारिता
५. नारायण के. पी., संपादन कला
६. शुक्ल, विष्णुदत्त, पत्रकार कला
६. त्रिखा नन्दकिशोर, पत्र संपादन कला ।
७. ओझा प्रफुल्ल चन्द्र, मुक्त मुद्रण कला
८. वैदिक वेदप्रताप, हिन्दी पत्रकारिता : विधि आयाम

चतुर्थ सेमेस्टर

अनुसंधान अथवा विशेष अध्ययन(लेखक एवं कवि विशेष) ऐच्छिक पत्र

हि. संकेतांक ५७०

क्रेडिट आवर ६ पूर्णांक अनुसंधान हेतु १००

विशेष पत्र हेतु ६०

पाठ घंटा ९६

बाह्य परीक्षा का समय ३ घंटा

उद्देश्य :

यह पत्र अनुसंधान अथवा विशेष अध्ययन का पत्र है। ६० अंक के इस पत्र के अन्तर्गत छात्र अपनी इच्छानुसार अनुसंधान या किसी दो विशेष पत्र का चयन कर सकते हैं। विशेष पत्र हेतु सात विकल्प दिए गए हैं, शोध का विषय अथवा विशेष पत्र के चुनाव में विभागीय प्रमुख की अनुमति आवश्यक होगी। छात्रों के अध्ययन सम्बन्धी गुणवत्ता अभिवृद्धि तथा विषय को गहराई से समझने की क्षमता का विकास इस पत्र का उद्देश्य है। अंक विभाजन दो खण्डों में बाटा गया है। अनुसंधान के लिए अंकों को तीन खण्डों में बाटा गया है। अनुसन्धान के लिए पूर्णांक १०० होगा।

अनुसंधान हेतु :

खण्ड क : शोध लेखन : ७० अंक

खण्ड ख : बाह्य परीक्षक : २० अंक

खण्ड ग : अन्तः परीक्षक : १० अंक

विशेष पत्र हेतु

खण्ड क : समीक्षात्मक प्रश्न ४० अंक

खण्ड ख : व्याख्या : २० अंक।

साहित्यकार विशेष : सूरदास

रचना : सूरसागर : प्रथम खण्ड

साहित्यकार विशेष : तुलसीदास

रचना : विनयपत्रिका

साहित्यकार विशेष : प्रेमचन्द

उपन्यास : प्रेमाश्रम

कथा साहित्य : कफन, पूस की रात, शतरंज के खिलाडी, नशा, सवा सेर गेहूँ, सद्गति, मनोवृत्ति, ठाकुर का कुआँ, रामलीला, पंचपरमेश्वर, ईदगाह, लाटरी, दूध का दाम, दो बैलों की कथा ।

साहित्यकार विशेष : महादेवी का गद्य साहित्य

रचना : अतीत के चलचित्र(रेखाचित्र), रामा, घीसा, बदलू

श्रृंखला की कडियाँ(नारी विषयक सामाजिक निबन्ध) युद्ध और नारी, नारीत्व का अभिशाप, आधुनिक नारी

पथ के साथी(संस्मरण) प्रणाम, सुभद्रा कुमारी चौहान, निराला

क्षणदा(ललित निबन्ध) करुणा का सन्देशवाहक, सुई दो रानी डोरा दो रानी

संकल्पिता(आलोचनात्मक) भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि, भाषा का प्रश्न

साहित्यकार विशेष : जैनेन्द्र

उपन्यास : त्यागपत्र

सुनीता

परख

साहित्यकार विशेष : उषाप्रियम्बदा

उपन्यास : पचपन खम्भे लाल दीवारें

रुकोगी नहीं राधिका

शेषयात्रा ।

लोकसाहित्य एवं संस्कृति

पाठ्यपुस्तक एवं अनुशंसित पुस्तक

१. बाहरी हरिदेव, सूरसागर(प्रथम खण्ड) लोकभारती, इलाहाबाद
२. दिव्दी हजारीप्रसाद, सूर साहित्य, राजकमल प्रकाशन
३. शुक्ल रामचन्द्र, सूरदास ना. प्र. स.
४. राय पूर्णमासी, हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य : मधुर भाव की उपासना, भारती भवन, पटना ।
५. तुलसीदास, विनयपत्रिका, गीता प्रेस, गोरखपुर
६. सिंह उदयभानु, तुलसी दर्शन मीमांसा, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
७. दीक्षित राजमणि, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञान मण्डल वाराणसी ।
८. मदान, इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन
९. मदनगोपाल, प्रेमचन्द
१०. गुरु राजेश्वर, प्रेमचन्द एक अध्ययन
११. गुप्त मन्मनाथ, कथाकार प्रेमचन्द
१२. डा. रामजी पाण्डेय, महादेवी प्रतिनिधि गद्य रचनाएँ
१३. जैनेन्द्र, त्यागपत्र, पूर्वोदय प्रकाशन

१४. जैनेन्द्र, परख

१५. जैनेन्द्र, सुनीता

१६. उषाप्रियम्बदा, पचपन खम्भे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन

१७. उषाप्रियम्बदा, शेषयात्रा, राजकमल प्रकाशन

१८. उषाप्रियम्बदा, रुकोगी नहीं राधिका, राजकमल प्रकाशन ।

नोट : आवश्यकतानुसार परिमार्जन अपेक्षणीय है ।